17 July 2019

लूकस 15:8-10

Parable of the lost coin

''ईश्वर के दूत एक पश्चातापी पापी के लिए आनंद मनाते है'' – भटकी हुई भेड़, खोया हुआ सिक्का और खोया हुआ लड़का– ये तीन दृष्टान्त एक के बाद एक इसी अध्याय में आते है और तीनों का सबसे महत्वपूर्ण संदेश है ईश्वर की दया। ईश्वर प्रेम है। और यही संदेश लेकर ईश्वर इंसान के रूप में अवतरित हुए (Jn. 3:16)। दुःख की बात यह है कि यहूदियों ने कभी भी यह बात नहीं समझीं। वे हमेशा ईश्वर को डरावने समझे। ''जो मुझ से बैर करते है, मैं तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी संतती को उनके अपराधों का दण्ड देता हूँ'' (Ex. 20:5)। यहूदियों की यह गलतफहमी लिखित कानून को जरूरत से ज्यादा तबज्जों देने से हुई थी।

ईश्वर हमेशा से करुणामय रहे है। तुम लोगों ने स्वयं देखा है कि मैं ने मिस्र के साथ क्या–क्या किया और मैं जिस तरह तुम लोगों को गरुड़ के पंखों पर बैठाकर यहां अपने पास ले आया'' (Ex. 19:4)। ''तुम्हारे पाप सिंदूर की तरह लाल क्यों न हो, वे हिम की तरह उज्जवल हो जाएंगे... यदि तुम आज्ञापालन स्वीकार करोगे... (Is.1:18,19)। ''मैं तुम लोगों को एक नया हृदय दूंगा और तुम में एक नया आत्मा रख दूंगा'' (Ez. 26:26)। ईश्वर ने यह संदेश बार–बार अपने नबियों द्वारा यहूदियों को दिया। पर, वे कभी नहीं समझे। इसी करुणा और प्रेम का संदेश लेकर प्रभु येसु आये। उनको सुनने बहुत से नाकेदार आये थे। परंतु, शुद्धीकरण के नियम का हवाला देकर फरीसी भुनभुनाने लगे। तब प्रभु ने ये तीनों दृष्टांत एक के बाद एक सुनाये और बोले– ''ईश्वर के दूत एक पश्चातापी पापी के लिए आनन्द मनाते है'' (Lk. 15:10)।

ईश्वर जानते है कि हम कमजोर है। ''मैं जो भलाई चाहता हूँ, वह नहीं कर पाता, बल्कि मैं जो बुराई नहीं चाहता, वही कर डालता हूँ'' (Rom 7:19)। लेकिन हमें ईश्वर से डरकर, उनकी दया पर विश्वास न रखकर, यूदस जैसे हताश नहीं होना चाहिए। हमें चाहिए कि हम अपने पापों पर रोकर, उस पापिनी स्त्री जैसे (Lk. 7:36-50) प्रभु के चरणों पर लिपटें। प्रभु हमें माफ करेंगे और हमारे बारे में भी यह कहंगे– ''मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मैं ने जो सिक्का खोया था, उसे पा लिया है'' (Lk. 15:9)।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019